के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

अप्रैल – जून, 2018 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–17

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक – 20 जून, 2018

आयोग के स्तर पर गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की जून 2018 को समाप्त तिमाही बैठक दिनांक 20.06.2018 को आयोग के सचिव एवं अध्यक्ष रा.भा.का.स. श्री सनोज कुमार झा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। समिति के अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी प्रभागों की पिछली तिमाही हिंदी प्रगति की जानकारी प्राप्त की गई। इस तिमाही बैठक में सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन और हिंदी के प्रचार प्रसार पर विशेष बल दिया गया एवं हिंदी की विभिन्न गतिविधियों तथा कार्यक्रमों की रूपरेखा भी तैयार की गई।

चर्चा के दौरान अध्यक्ष महोदय ने यह सुझाव दिया कि इन कार्यक्रमों के प्रतिभागियों की हिंदी में कार्य बढ़ाने की दृष्टि से भी सम्यक समीक्षा की जाए। उन्होंने कहा कि इस बात का भी मूल्यांकन किया जाए कि हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग कार्यालय में किया जा रहा है। इसके अलावा रूटीन किस्म के पत्र/परिपत्र/टिप्पणियों आदि के लिए हिन्दी के प्रयोग को सुनिश्चित करने पर भी बल दिया गया।

इस बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों ने भाग लिया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान विचार–विमर्श

सौदामिनी

के वि वि आयोग
CERC

अप्रैल – जून, 2018 केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग खण्ड–I अंक–17

पुरस्कृत निबंध

सांप्रदायिक सद्‌भावना

सांप्रदायिक सद्भावना एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया व एक भावना है जो किसी राष्ट्र अथवा देश के लोगों में भाई–चारा अथवा राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं अपनत्व का भाव प्रदर्शित करता है। सांप्रदायिक सद्भावना राष्ट्र को सशक्त एवं संगठित बनाती है। यह भावना विभिन्न धर्म्मों, संप्रदायों, जाति, वेशभूषा, सभ्यता एवं संस्कृति के लोगों को एक सूत्र में पिरोए रखती है। अनेक विभिन्नताओं के उपरांत भी सभी परस्पर मेलजोल से रहते हैं।

हमारा भारत देश सांप्रदायिक सद्भावना की एक मिसाल है। जितनी विभिन्नताएं हमारे देश में उपलब्ध हैं उतनी शायद ही विश्व के किसी अन्य देश में देखने को मिले। यहां अनेक जातियों के लिोग, जिनके रहन–सहन, खानपान व वेशभूषा पूर्णतया भिन्न हैं, एक साथ निवास करते हैं। जब तक कि किसी राष्ट्र के लोगों में सांप्रदायिक सद्भावना मौजूद है तब तक वह राष्ट्र भी सशक्त है। बाह्य शक्तियां इन परिस्थितियों में उसकी अखंडता व सार्वभौमिकता पर प्रभाव नहीं डाल पाती हैं परंतु जब–जब यह सदभावना खंडित होती है तब–तब उसे अनेक कठिनाइयों से जूझना पड़ता है। हम यदि अपने ही इतिहास के पन्नों को पलट कर देखें तो हम यही पाते हैं कि जब भी हमारी सांप्रदायिक सद्भावना कमजोर पड़ी है तभी बाह्य शक्तियों ने उसका लाभ उठाया है और हमें उनके अधीन रहना पड़ा है।

इसके विपरीत हमारी सांप्रदायिकता के प्रति सद्भावना की अवचेतना से ही हमें वर्षों की दासता से मुक्ति मिल सकी है। अतः किसी भी राष्ट्र की एकता, अखंडता व सार्वभौमिकता बनाए रखने के लिए यह सद्भावना अनिवार्य है। इसके विपरीत देश के कुछ लोगों में व्याप्त सांप्रदायिकता, जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रीयता आदि सभी सांप्रदायिक सद्भावना में अवरोध उत्पन्न करते हैं। ऐसे लोगों की मानसिकता क्षुद्र होती है जो निजी स्वार्थ के चलते स्वयं को राष्ट्र की प्रमुख धारा से अलग रखते हैं तथा अपने संपर्क में आए अन्य लोगों को भी अलगाववाद के लिए उकसाते हैं। यही आगे चलकर लोगों में विघटन का रूप लेता है जो फिर खून–खराबे, मारकाट व दंगों आदि में परिवर्तित हो जाता है। इन आंतरिक अवरोधक लोगों के अतिरिक्त बाह्य शक्तियां भी बाधक बनती हैं, जो देश हमारी स्वतंत्रता व प्रगति से ईर्ष्या रखते हैं वे इस सद्भावना को खंडित करने हेतु सदैव प्रयास करते रहते हैं। कश्मीर की हमारी समस्या इन्हीं प्रयासों की उपज है जिसमें हमारे देश के कई नवयुक दिग्भ्रमित होकर राष्ट्र की प्रमुख धारा अथवा राष्ट्र की एकता से अलग हो चुके हैं और सांप्रदायिक सद्भाव से राष्ट्रीय एकता मजबूत होती है। सांप्रदायिक सद्भावना व इसकी अक्षुणता बनाए रखना अति आवश्यक है। वैसे तो इस सद्भाव को संबल प्रदान करने वाले तत्व कम हनीं है, बस उन्हें समय–समय पर अपने जीवन में आत्मसात करने की आवश्यकता है। जैसे विभिन्न संगीत सम्मलेनों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि के माध्यम से जनता के बीच सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देनेवाला संदेश जाता है।

भारत एक महान, स्वतंत्र एवं प्रगतिशील राष्ट्र है। सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपनी क्षुद्र मानसिकता से स्वयं को दूर रखें। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि हम चाहे जिस क्षेत्र, प्रांत, जाति या समुदाय के हैं परन्तु उससे पूर्व हम भारतीय नागरिक हैं। भारतीयता ही हमारी वास्तविक पहचान है। अतः हमें कभी भी सांप्रदायिकता या भेदभाव नहीं करना चाहिए जिससे हमारे देश के गौरव व उसकी प्रगति में बाधा आए।

अंततः हम स्वयं विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, जाति, वेशभूषा, सभ्यता एवं संस्कृति का सम्मान करं तथा अपने संपर्क में आने वाले समस्त व्यक्तियों को भी इसके लिए प्रेरित करें जिससे हमारी एकता युग–युगांतर तक बनी रहे। हम एक थे हम एक हैं और सदा एक बने रहेंगे।

(विनीता छतवाल)
निजी सचिव (विधि)

के वि वि आयोग
CERC

सौदामिनी

अप्रैल – जून, 2018 केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग खण्ड–I अंक–17

कविता

दिन रात गुजरते है कैसे साल पूछिये
कुछ ख्वाब कह रहे हैं मेरा हाल पूछिये

उसने मेरी चाहत के सपने बहुत देखे
हासिल मगर हुआ क्या न पूछिये

कुछ उनकी खैरियत में भी हमने किये सजदे
जो हमसे नहीं कहते मेरा हाल पूछिये

जिन लोगों ने अक्सर मुझे मंज़िल नहीं समझा
कुछ उनकी चाहतों पे मेरी चाल पूछिये

कैसे कहा और क्यों बदल जाते हैं रिश्ते
हालात कह रहे हैं वो मलाल पूछिये

जिसने कभी परवाने से रिश्ता नहीं रखा
हर रात कह रही है वो मसाल पूछिये

जिसने मेरे जज्बात को बेहतर नहीं माना
उसमें हमारा था क्या न मिसाल पूछिये

जे.के. तिवारी
कार्यकारी, प्रशासन

व्यंग्य

भिखारी का आत्म–सम्मान

वो लाल बत्ती वाले चौराहे पर तनकर सीधा खड़ा रहता है। लाल बत्ती होते ही उसके शरीर में गजब की फुर्ती आ जाती है और वह लपककर लाल बत्ती पर रूके लोगों के सामने हाथ फैला देता है। उसकी आंखों में चमक है, उसके चेहरे पर कोई दयनीय भाव नहीं। उसकी आवाज में थोड़ी–सी भी याचना नहीं। वह पूरे अधिकार के साथ भीख मांगता है। उसके अपने कई पक्के भीख देने वाले हैं। उसके पास भी समय की कमी है। उसे कम समय में ज्यादा से ज्यादा लोगों को निपटाया है। वह भीख देने न देने वालों के बीच फर्क करना सीख गया है। वह भीख देने वाले की आंखों को पढ़ लेता है। जब तक वो पैसे निकालें, वह इस बीच दूसरे दयावान को देखने लगता है। कई बार वह इतने साधिकार भाव से तनकर खड़ा हो जाता है कि सामने वाला ही भिखारी जैसा नजर आने लगता है। दरअसल वह बाजार का मर्म समझ चुका है। वह समझ चुका है कि ताकतवर के सामने हम झुकते हैं, उसके तलवे सहलाते हैं और कमजोर को दुतकारते हैं–दुलत्ती मारते हैं। उसने हमसे यही सीखा है और अब हम पर लागू कर रहा है।

उस भिखारी का आत्मसम्मान बेवजह नहीं है। वह अंतर्राष्ट्रीय भिखारी देख चुका है। वह दूसरों के सामने कटोरा फैलाने के बजाय अपनों के सामने कटोरा फैलाना बेहतर समझता है। वह अपनों से जुड़ा रहता है। बाहर से लेने में शर्म नहीं तो अपनों से मांगने में कैसी शर्म? उसके तेवर देख कोई उसे मुंह नहीं लगाना चाहता। उसके पास बड़े वजनदार तर्क हैं। सब उसे भीख देने में ही अपनी भलाई समझते हैं। वह सबसे बराबर का व्यवहार करता हे। ''जो दे उसका भला जो न दे उसका भी भला'' की रट ही नहीं लगाता उसे अपना भी रहा है।

सौदामिनी

के वि वि आयोग
CERC

अप्रैल – जून, 2018 केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग खण्ड–I अंक–17

उसे अपने पेशे पर नाज़ है। वह छिपकर नहीं, खुले वार करता है। वह कानून व्यवस्था की मुश्किलें नहीं बढ़ाता। वह जानता है कि दुकान पर बैठो तो डंडी मारनी होती है। सरकारी ऑफिस में होता तो ऊँघता रहता। पुलिस थाने में होता तो बलात्कार करता। उसे यह सब नहीं सुहाता। वह सहनशील है–आशावादी है। कुछ लेकर दूसरे के परलोक सुधारने की गारंटी देता है। वह पंडे–पुजारी की तरह ठग विद्या नहीं करता। वह दूसरे को दानी होने का मौका दे रहा है। वह इन दुखी लोकवासियों के परलोक सुधार रहा है।

वह सामने वाले से आंखें मिला रहा है– सामने वाला आंख चुरा रहा है। वह हमारा सच्चा अनुकर्ता है। वह हमसे पहले शर्म को जीत चुका हे। उसका काम सीधा साफ है। कोई हेरा–फेरी, छीना–झपटी नहीं। जो करता है उसकी पूरी जिम्मेदारी लेता है। पैसे बाद में लेता है शुभाशीष पहले देता है। यह उदारता, निष्काम भावना और उच्चता और कहां नजर आती है। उसने जलन, नफरत और कलुषता जैसी कमजोरियों को जीत लिया है। वह भाग्यवादी नहीं पुरुषार्थवादी है।

हमने हालात को ढाँका है तो उसने उघाड़ा है। हमने जहां आंख चुराई है, उसने वहीं आंख मिलाई है। वह हमसे एक कदम आगे है। बस उसकी कमीज फटी है और हमारी बनियान और मौजे फटे हैं। हम गुरबत से लुका–छिपी का खेल खेल रहे हैं, तो उसने इसे स्वीकार किया है। हम उसे समझें न समझें पर वो हमें समझ गया है। उसे देश–समाज की नब्ज पकड़ में आ गई है। बस वह कुछ सोचकर हमारा लिहाज कर रहा है। हमारी कलई खुलने से बच रही है। उसे हमारी नहीं हमें भी उसकी बराबर की जरूरत है। हम आत्मनिर्भर होने की प्रक्रिया में हैं, वो आत्मनिर्भर हो चुका हे। हम पथ के राही हैं, वो मंजिल पा चुका है। वह हमारा प्रतीक है। हमारा असली प्रतिनिधि है। वह नई औद्योगिक क्रान्ति और वैज्ञानिक अनुसंधानों से लैस इक्कीसवीं सदी में जाने की पूरी तैयारी कर चुका है। वह स्मार्ट है। हमारा आदर्श है। सबसे बड़ी बात है कि वो अपनी जमीन से जुड़ा हुआ है। उसके स्थायित्व को कोई चुनौती नहीं है। वह अपने फर्ज और अधिकारों के प्रति सचेत है–जागरूक है। उसका आत्म–सम्मान हम सफेदपोशों की आत्मप्रवंचना की तरह नहीं नकली नहीं। उसका आत्म–सम्मान असली है, वाजिब है!.......

(राजेन्द्र प्रताप सहगल)
राजभाषा अधिकारी

संरक्षक
ए.के.सिंघल
सदस्य

www.cercind.gov.in

संपादक मंडल
सनोज कुमार झा, सचिव
कमल किशोर, सहायक प्रमुख
राजेन्द्र सहगल, राजभाषा अधिकारी

कृपया इस पते पर अपनी प्रतिक्रिया भेजें :
केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग
भूतल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ,
नई दिल्ली–110001
Email : info@cercind.gov.in